रॉबर्ट वानॉय , निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 2ए

निर्गमन की तिथि, निष्कर्ष, इस्राएलियों का उत्पीड़न, मिस्र पर विपत्तियाँ

समीक्षा

1. निर्गमन 1-11, मिस्र से मुक्ति

बी. निर्गमन की तिथि की समस्या

हम निर्गमन 1-11, "मिस्र से मुक्ति" पर चर्चा कर रहे थे और हम आपके व्याख्यान की रूपरेखा, "ऐतिहासिक सेटिंग" या "पलायन की तारीख की समस्या" पर बी के अंतर्गत थे। अठारहवें राजवंश की तिथि को निर्गमन की प्रारंभिक तिथि कहा जाता है, लगभग 1446 ईसा पूर्व; उन्नीसवीं राजवंश की तारीख को निर्गमन के लिए देर की तारीख कहा जाता है, लगभग 1250 ईसा पूर्व हमने कुछ प्रमुख तर्कों पर गौर किया जो शुरू में देर की तारीख के लिए आगे बढ़ाए गए थे। मुझे लगता है कि अब तक का सबसे मजबूत तर्क पहला ही है। निर्गमन 1:11 कहता है कि फिरौन के लिए इन भंडारण शहरों का निर्माण करने के लिए इस्राएलियों को जबरन श्रम में रखा गया था। बेशक फिरौन का नाम नहीं है, यह समस्या का हिस्सा है। परन्तु भण्डार नगर पिथोम और रामसेस थे। बेशक, रामेसेस उन्नीसवें राजवंश का फिरौन था। इसलिए हमने उन अतिरिक्त तर्कों पर चर्चा की जो कम मजबूत थे, क्योंकि वे बड़े पैमाने पर मौन या अनुमान से आए तर्क थे।

दूसरा तर्क नेल्सन ग्लूक द्वारा ट्रांस-जॉर्डन का पुरातात्विक सर्वेक्षण था । उन्हें चिंता थी कि 1300 से पहले पांच शताब्दियों तक ट्रांस-जॉर्डन, यानी मोआब और एदोम के क्षेत्रों में गतिहीन आबादी नहीं थी। इसलिए यदि आपके पास निर्गमन की प्रारंभिक तिथि होती, तो ऐसा नहीं होता। मोआब में कोई बसी हुई आबादी रही हो। फिर भी तुम गिनती में पढ़ते हो कि मोआबियों ने बाहर आकर इस्राएलियों को चारों ओर जाने को विवश किया। उनके पास खेत और अंगूर के बाग थे, जो पलायन और विजय के समय एक गतिहीन आबादी की तरह लगता है।

तीसरा तर्क कुछ कनानी शहरों में विनाश के स्तर के आधार पर था, जिनका उल्लेख जोशुआ की पुस्तक में विजय के समय जोशुआ द्वारा लिया गया था। वे विनाश स्तर 1250-1200 ईसा पूर्व के समय में थे, जिसे स्वर्गीय कांस्य युग कहा जाता है। अब निःसंदेह प्रश्न यह उठता है कि विनाश का कारक कौन था? क्या विजय के समय यह इस्राएली थे? यह एक धारणा है—हो सकता

है, लेकिन यह किसी भी तरह से निश्चित नहीं है। लेकिन यह देर की तारीख के लिए तर्कों में से एक है - स्वर्गीय कांस्य युग के अंत में विनाश के स्तर। चौथा तर्क मौन से एक तर्क है. न्यायाधीशों की पुस्तक में फिरौन सेती और रामेसेस के फ़िलिस्तीनी अभियानों का कोई संदर्भ नहीं है। हम जानते हैं कि सेती और रामसेस ने कनान देश से होकर अपनी सेनाएँ भेजीं। यदि विजय 1400 के दशक में हुई होती, तो आप सेटी और रामेसेस के समय न्यायाधीशों के काल में होते। अन्य उत्पीड़क लोगों का तो उल्लेख है लेकिन मिस्रवासियों का कोई संदर्भ क्यों नहीं है?

फिर आखिरी बात जिसका मैंने उल्लेख किया वह वास्तव में देर की तारीख के लिए कोई तर्क नहीं है, बल्कि यह देर की तारीख के लिए एक टर्मिनस निर्धारित करता है, जिसे मेरेनेप्टाह शिलालेख कहा जाता है जहां वह इज़राइल का उल्लेख करता है। कभी-कभी इसे इज़राइल स्टेल या मेरेनेप्टाह स्टेल कहा जाता है। इसका शासनकाल लगभग 1220 तक माना जा सकता है। इसलिए यहां आप कहेंगे कि जहां तक देर की तारीख के लिए अंतिम टर्मिनस की बात है, तो आप कनान में इज़राइल के अतिरिक्त-बाइबिल संदर्भों के आधार पर इसे 1220 से नीचे नहीं धकेल सकते हैं।

हमारे कक्षा सत्र के अंत में मैंने प्रारंभिक तिथि - अठारहवीं राजवंश तिथि - के लिए तर्क शुरू किया। और फिर से पहला तर्क मुझे लगता है कि सबसे मजबूत है, और वह 1 राजा 6:1 के पाठ पर आधारित है, जो निर्गमन के 480 साल बाद, सुलैमान के शासनकाल के चौथे वर्ष में, उसने मंदिर का निर्माण शुरू किया था। और यहां आपको समय मिलता है. हम सुलैमान के शासनकाल के चौथे वर्ष को 966/967 तक बता सकते हैं - 480 वर्ष जोड़ें और आपको प्रारंभिक तिथि 1446 ईसा पूर्व मिलती है, तो फिर आप उत्पीड़न के फिरौन और फिरौन के लिए थुटमोस और अमेनहोटेप के समय में वापस आ जाएंगे। पलायन.

दूसरा तर्क जिस पर हमने गौर किया वह यह था कि थुटमोस III लंबे जीवन काल वाला एक महान निर्माता था। हम जानते हैं कि उन्होंने अपनी निर्माण परियोजनाओं में बहुत से लोगों को काम पर लगाया था। हम यह भी जानते हैं कि उनका जीवनकाल लंबा था, जो मूसा के लंबे जीवन के कालक्रम के साथ फिट बैठता है। तो यह दूसरा तर्क है. ऐसा कहा जाता था कि मिस्र के डेल्टा भाग में अठारहवें राजवंश के निर्माण का कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन 1990 के दशक में डेल्टा क्षेत्र में अठारहवें राजवंश के निर्माण के प्रमाण मिले। इसलिए वह साक्ष्य उस तर्क का प्रतिकार करता है।

तीसरा तर्क जो हमने देखा, जो बहुत मजबूत नहीं है, अमर्ना पत्रों में हबीरू का संदर्भ है, जो शहर के राज्यों और कनान के राजाओं और मिस्र के फिरौन के बीच के पत्र हैं जो इन लोगों द्वारा हमलों के बारे में बात करते हैं जिन्हें हबीरू कहा जाता है । तो फिर सवाल यह उठता है: क्या हबीरू वास्तव में हिब्रू हैं? बहुत से लोग जो एक जैसे लगते थे, उन्हें हबीरू के रूप में समूहीकृत किया गया। मैंने पिछले सप्ताह केए किचन के बयान का उल्लेख किया था कि हिब्रू लोग हबीरू हो सकते हैं लेकिन सभी हबीरू हिब्रू नहीं हैं। ऐसा लगता है कि पदनाम "हबीरू" को एक जातीय समूह के बजाय एक सामाजिक वर्ग के साथ अधिक पहचाना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे खानाबदोश किस्म के लोग थे जो इधर-उधर घूमते थे, समय-समय पर बस जाते थे और जो स्वभाव से भाड़े के लोग थे। लेकिन वे लंबे समय तक पूरे मध्य पूर्व में थे। इब्रानियों के चले जाने के बाद मिस्र में हबीरू भी हैं। इसलिए यह पूरा मुद्दा पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है, हालांकि कुछ लोगों ने हबीरू को हिब्रू समूह के लोगों के साथ जोड़कर इसे विजय की प्रारंभिक तिथि के समर्थन के रूप में उपयोग करने का प्रयास किया है।

4. प्रारंभिक तिथि तर्क 4: जेरिको - केन्योन बनाम ब्रायंट वुड

एक अतिरिक्त तर्क है जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूं जिसका उपयोग कभी-कभी किया गया है, लेकिन फिर से, जो पूरी तरह से स्पष्ट या चुनौती रहित नहीं है; और यह जेरिको की खुदाई से प्राप्त तर्क है, वह शहर जिसे यहोशू ने जॉर्डन नदी पार करने और कनान की भूमि में प्रवेश करने के तुरंत बाद लिया था। उस स्थल पर उत्खनन का एक लंबा इतिहास रहा है। प्रारंभ में खुदाई 1900 के दशक की शुरुआत में जर्मनों द्वारा की गई थी - और बाद में 1930 के दशक में जॉन गारस्टैंग नामक एक अंग्रेज द्वारा की गई थी। जॉन गारस्टैंग ने निष्कर्ष निकाला कि शहर 1400 ईसा पूर्व के आसपास नष्ट हो गया था और यदि आप उसके मामले को देखते हैं, तो आप कहेंगे कि यह एक प्रारंभिक तारीख में फिट बैठता है - यदि 1446 निर्गमन का समय है, तो आप जंगल में 40 साल बिताते हैं और आप आते हैं कनान के समय तक, लगभग 1400। इसलिए 1930 के दशक के बाद काफी हद तक आम सहमति थी। पुरातत्व विजय से जुड़ा था और बाइबल जो कहती है, उसकी सटीक पुष्टि करता था। लेकिन फिर 1950 के दशक में कैथलीन केन्योन नाम का एक और

अंग्रेजी पुरातत्वविद् था। कैथलीन केन्यन ने वहां बहुत सारी खुदाई की और वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि गारस्टैंग ने विजय के समय स्थल का जो स्तर निर्धारित किया था वह गलत तरीके से किया गया था। उसने निष्कर्ष निकाला कि वह स्तर वास्तव में लगभग 2300 ईसा पूर्व का विनाश था, किसी भी संभावित समय से बहुत पहले जब इस्राएली उस विनाश के एजेंट हो सकते थे। फिर उसने कहा, 2300 ईसा पूर्व के उस विनाश के बाद, शहर का पुनर्निर्माण किया गया और फिर मध्य कांस्य युग के अंत में इसे फिर से नष्ट कर दिया गया। मध्य कांस्य युग 2000-1500 है। उन्होंने कहा कि मध्य कांस्य युग की समाप्ति से कुछ समय पहले, लगभग 1580 में इसे फिर से नष्ट कर दिया गया था। प्रारंभिक तिथि के आधार पर यह भी इजरायली विजय के समय से पहले का रहा होगा, लेकिन उन्होंने कहा कि इसके बाद, साइट वास्तव में खाली थी। 1500 से 1200 तक कोई महत्वपूर्ण स्तर नहीं थे। इसलिए उनके काम ने गारस्टैंग के निष्कर्षों के बारे में कई सवाल उठाए। फिर सवाल उठाया गया कि क्या पुरातत्व लगभग किसी भी समय इजरायल की विजय का समर्थन करता है क्योंकि 1200 से नीचे, आप सोचेंगे कि तब भी साइट पर अधिक महत्वपूर्ण विनाश हुआ होगा।

मैंने एक शीट दी जिसमें टाइम मैगज़ीन, 5 मार्च, 1990 के एक लघु लेख की फोटोकॉपी थी। यह लेख BAR में प्रकाशित एक लेख का संक्षिप्त सारांश है, यानी, बाइबिल पुरातत्व समीक्षा, जिसे ब्रायंट जी। वुड ने लिखा है, जिसका शीर्षक *है*, "क्या इस्राएलियों ने जेरिको को जीत लिया?" ब्रायंट वुड ने जेरिको में अपनी खुदाई पर कैथलीन केनियन द्वारा प्रकाशित रिपोर्टों पर पलटवार किया था। जब तक वुड ने अपना लेख लिखा, तब तक कैथलीन केन्योन बहुत पहले ही जा चुकी थीं। 1978 में उनकी मृत्यु हो गई। वह 1906 से 1978 तक जीवित रहीं। वह जेरूसलम में ब्रिटिश स्कूल ऑफ आर्कियोलॉजी की निदेशक थीं। वह स्पष्ट रूप से एक सम्मानित विद्वान थीं। उन्होंने जेरिको में की गई खुदाई से प्राप्त निष्कर्षों को प्रकाशित किया और अपने निष्कर्ष निकाले। ब्रायंट वुड अपनी प्रकाशित उत्खनन रिपोर्टों पर वापस गए और कैथलीन केनियन द्वारा निकाले गए सबूतों से भिन्न निष्कर्ष निकालने के लिए उन रिपोर्टों का उपयोग किया। इसलिए यदि आप टाइम मैगज़ीन के सारांश से ब्रायंट वुड के लेख के उस सारांश को देखते हैं, तो आप उस पहले पैराग्राफ के अंत में देखते हैं, इस लेख के लेखक कहते हैं, “दिवंगत ब्रिटिश पुरातत्वविद् कैथलीन केनियन ने 1950 के दशक में स्थापित किया था कि प्राचीन रहते हुए शहर वास्तव में नष्ट हो गया था, यह 1550 ईसा पूर्व

के आसपास हुआ था, यहोशू के प्रकट होने से लगभग एक सौ पचास साल पहले। लेकिन पुरातत्वविद् ब्रायंट वुड ने *बाइबिलिकल आर्कियोलॉजी रिव्यू* के मार्च/अप्रैल अंक में लिखते हुए दावा किया है कि केन्योन गलत था। अपने शोध के पुनर्मूल्यांकन के आधार पर, जिसे हाल ही में विस्तार से प्रकाशित किया गया था, वुड का कहना है कि शहर की दीवारें बाइबिल के विवरण से मेल खाने के लिए बिल्कुल सही समय पर गिर सकती थीं। मुझे नहीं लगता कि यहाँ इतना मुद्दा है। मैं सिर्फ यह देखना चाहता हूं कि वहां क्या सबूत है या नहीं। लेकिन अगला पैराग्राफ- "जेरिको के विनाश की केनियन की तारीख काफी हद तक इस तथ्य पर आधारित थी कि वह साइप्रस से आयातित सजावटी मिट्टी के बर्तनों को खोजने में विफल रही, जो 1400 ईसा पूर्व के आसपास के क्षेत्र में लोकप्रिय थे" अब ध्यान दें, फिर से, यह नकारात्मक सबूत है। उसे कुछ *नहीं* मिला, ऐसा नहीं कि उसे कुछ मिला- तथ्य यह है कि उसे कुछ नहीं मिला- "उसने तर्क दिया, इसकी अनुपस्थिति का मतलब है कि शहर बहुत पहले ही निर्जन हो गया था /लेकिन वुड, जो अब टोरंटो विश्वविद्यालय में प्राचीन मिट्टी के बर्तनों के विशेषज्ञ हैं, का तर्क है कि केन्योन की खुदाई शहर के एक गरीब हिस्से में की गई थी, जहाँ महंगे आयातित मिट्टी के बर्तन किसी भी स्थिति में अनुपस्थित होते। और उनका कहना है कि 1930 के दशक में जेरिको में खोदे गए अन्य मिट्टी के बर्तन, 1400 ईसा पूर्व में आम थे" तो आप साक्ष्य की चर्चा में आते हैं और इस प्रश्न में कुछ हद तक साक्ष्य की अनुपस्थिति है। सिर्फ इसलिए कि आपको वह नहीं मिला, तो क्या इसका मतलब यह है कि वह वहां था ही नहीं? इसमें बहुत कुछ ऐसा था जो नहीं मिला। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए अन्य कारण देते हैं कि इसे 1400 ईसा पूर्व के आसपास नष्ट कर दिया गया था। यदि आप तीसरे कॉलम, दूसरे पैराग्राफ को देखें, तो यह रेडियोकार्बन डेटिंग के बारे में बात करता है, लेकिन फिर उसके अंत में, "जेरिको कब्रों में पाए गए मिस्र के ताबीज हो सकते हैं।" लगभग 1400 ईसा पूर्व का समय" तो ऐसा लगता है कि यह वास्तव में 1400 के आसपास बसा हुआ था। वुड कह रहे हैं, "मुझे ऐसा लगता है जैसे बाइबिल की कहानियाँ सही हैं।" तो यह चर्चा वास्तव में जारी है।

मैं कह सकता हूँ कि हम उस पर वापस आएँगे जब हम जोशुआ की किताब के शुरुआती अध्यायों को देखेंगे जहाँ यह जेरिको की डेटिंग के बारे में बात करती है। हम इसे थोड़ा और विस्तार से देखेंगे। लेकिन मैं यह उल्लेख करना चाहता हूं कि जेरिको टीले की अधिकांश कांस्य युग की

सामग्री (1500-1200 ईसा पूर्व) या तो कटाव के कारण या लोगों द्वारा वहां जो कुछ भी था, उसके खनन के साथ-साथ टीले पर पुरातात्विक कार्य के कारण हटा दी गई है। विशेष रूप से शुरुआती जर्मन जिन्होंने टीले को परेशान किया और जिनके पास हर चीज़ की रिपोर्ट करने और हर चीज़ की तस्वीरें लेने के लिए आज के तरीके नहीं थे; और उस स्वर्गीय कांस्य युग के टीले का बहुत सा हिस्सा नष्ट हो गया है और उसे कभी भी पुनः प्राप्त नहीं किया जाएगा। इसलिए मुझे लगता है कि जेरिको के विनाश के आधार पर निष्कर्ष निकालना मुश्किल होगा। लेकिन यदि आप जॉन गारस्टैंग के मूल निष्कर्षों और फिर कैथरीन केनियन की रिपोर्टों से निकाले गए ब्रायंट जी. वुड के निष्कर्षों से सहमत हैं, तो आप जेरिको की विजय के लिए 1400 तारीख के साथ आते हैं, जो निर्गमन की प्रारंभिक तारीख के साथ फिट बैठता है।

तो ये निर्गमन की प्रारंभिक और देर की तारीख के तर्क हैं। मुझे लगता है कि आप अधिक विस्तार से देख सकते हैं कि हम उनमें से प्रत्येक पर बहुत अधिक समय व्यतीत कर सकते हैं। हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि ऐसा करने के लिए इस पाठ्यक्रम में समय की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि हमने जो कहा है, उससे आप समझ सकते हैं कि यह एक सतत चर्चा होगी, लेकिन मुझे नहीं लगता कि दोनों पक्षों की ओर से कोई निर्णायक तर्क है। लेकिन चर्चा चलती रहेगी.

5. वनॉय का निर्गमन की तिथि का विश्लेषण

मैं बस कुछ चीजों का उल्लेख करना चाहता हूं जो कम से कम मेरे दिमाग में प्रारंभिक तिथि के निष्कर्ष की ओर साक्ष्य के संतुलन को तौलती हैं। मुझे लगता है कि वह समय उन्नीसवें राजवंश के बजाय अठारहवें राजवंश का था - और उस संबंध में कुछ टिप्पणियाँ हैं। पहली बात जो मैं उल्लेख करना चाहता हूं वह यह है कि न्यायाधीशों के कार्यकाल के कालक्रम को शुरुआती तारीख की तुलना में बाद की तारीख के साथ सामंजस्य बिठाना अधिक कठिन है। और इसका कारण यह है: यदि आप देर की तारीख लेते हैं, तो निर्गमन के लिए 1290, सुलैमान के शासनकाल के चौथे वर्ष के लिए 966 कहें - आपके पास काम करने के लिए केवल 324 वर्ष हैं - 324 वर्ष। देर की तारीख के लिए, निर्गमन के समय के बीच 324 वर्ष हैं - 1290 से 966 ईसा पूर्व यदि आप प्रारंभिक तिथि, 1446 से 966 लेते हैं, तो आपके पास 480 वर्ष हैं। यदि आप न्यायाधीशों की पुस्तक को देखें और पुस्तक

में सभी कालानुक्रमिक संदर्भों को जोड़ दें - उत्पीड़न के समय और विश्राम चक्र, तो आपको कुल 410 वर्ष मिलेंगे। और फिर आपको इसमें एली से सुलैमान के चौथे वर्ष तक का समय जोड़ना होगा - एली 1 शमूएल की शुरुआत में एक न्यायाधीश था - इसलिए आपके पास एली है, आपके पास शाऊल है, आपके पास डेविड है, और आप सुलैमान पर चलते हैं। यह न्यूनतम 116 वर्ष है - आपको जंगल में भटकने के वर्षों को जोड़ना होगा - और 40 वर्ष हैं। आपको विजय के समय के बाद यहोशू का वह समय जोड़ना होगा। तो यहोशू की सारी किताब, मान लीजिए कि आप और दस वर्ष जोड़ दें। तुम्हें वहां क्या मिलेगा? आपकी आयु 576 वर्ष है। अब जाहिर तौर पर यहां असली समस्या न्यायाधीशों की किताब में कालानुक्रमिक आंकड़े हैं। उत्पीड़न और आराम के समय के बीच ओवरलैप रहा होगा, और राष्ट्रीय की तुलना में स्थितियों का क्षेत्रीय समय अधिक रहा होगा; और यह ठीक है. यदि आपके पास 576 वर्ष हैं, तो वह 480 वर्षों में भी फिट नहीं बैठता है; यहां तक कि निर्गमन की प्रारंभिक तिथि के साथ भी, आपको ओवरलैप होना होगा। आपको कंप्रेस करना होगा. मेरा कहना यह है कि उस 576 को 480 की तुलना में 324 में समेटना कहीं अधिक कठिन है। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि न्यायाधीशों की पुस्तक में कालानुक्रम आपको देर से आने वाली तारीख के बजाय निर्गमन की प्रारंभिक तारीख की ओर इशारा करता है। पलायन.

दूसरी टिप्पणी. देर की तारीख के लिए एक तर्क जिसका हमने उल्लेख किया था, वह कांस्य युग के अंत में, 1250 से 1200 तक कनानी शहरों का विनाश स्तर था, जो उस समय इजरायल की विजय का प्रमाण था। वह तर्क तेजी से सवालों के घेरे में आ रहा है। कहा गया कि कितने शहरों को नष्ट कर दिया गया-स्पष्ट रूप से नष्ट कर दिया गया-और जला दिया गया? बस तीन, बस इतना ही- जेरिको, ऐ और हाज़ोर। यह कहता है कि दूसरों में उसने लोगों पर विजय प्राप्त की और उन्हें मार डाला, यह नहीं कहता कि उसने शहर को नष्ट कर दिया। इसलिए लोग इस अर्थ में शहरों की संशोधित विजय के बारे में बात करने लगे थे कि जब इज़राइल विजय में आया, तो उन्होंने इन सभी शहरों को पूरी तरह से नष्ट नहीं किया। वे आए और इन शहरों में बस गए और वहीं रहने लगे, हालाँकि उन्होंने निवासियों को मार डाला। लेकिन हमें इन सभी शहरों में विनाश के स्तर की तलाश नहीं करनी चाहिए। तो फिर सवाल यह है कि 1250 से 1200 तक विनाश के कारक कौन थे? आप बस अनुमान लगा सकते हैं। यदि आप उस 19 वें राजवंश में वापस जाते हैं , तो मेरनेप्टाह - यही वह है

जिसके पास इज़राइल के कनान देश में होने के बारे में वह शिलालेख था - कनान देश में छापे के बारे में बात करता है। शायद कुछ शहर मेरनेप्टा द्वारा नष्ट कर दिए गए थे ? लगभग 1200 में, मिस्र पर समुद्री लोगों द्वारा हमला किया गया था, जिनमें से अधिकांश क्रेते से आए थे। उन समुद्री लोगों को मिस्रवासियों ने खदेड़ दिया था। दूसरे शब्दों में, मिस्रवासियों ने उन्हें मजबूर कर दिया। इसलिये वे आये और कनान देश के दक्षिणी तट पर गाजा के क्षेत्र और तटीय मैदान में बस गये। वे पलिश्ती बन गये। अब निःसंदेह हम जानते हैं कि न्यायाधीशों के समय में पलिश्ती इस्राएल के साथ समस्या थे। लेकिन वह 1200 ईसा पूर्व के आसपास था, शायद पलिश्ती विनाश के एजेंट थे जब वे आए और जहां उन शहरों में से कुछ थे, वहां बस गए। हो सकता है कि उनमें से कुछ स्थल न्यायाधीशों के काल में कनानियों के साथ संघर्ष में इस्राएलियों द्वारा नष्ट कर दिए गए हों। यह कहना कठिन है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप यह कह सकते हैं कि 1250 से 1200 तक उन शहरों के विनाश का स्तर आवश्यक रूप से पलायन की देर की तारीख के लिए एक मजबूत तर्क है। इसलिए उस पर लगातार सवाल उठाए जा रहे हैं।

यदि आप उदाहरण के लिए हाज़ोर को देखें, जो उन स्थलों में से एक है जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे जोशुआ ने नष्ट कर दिया था, तो हाज़ोर में 1400, 1300 और 1230 पर विनाश के स्तर थे। अब अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि यह 1230 विनाश का स्तर के दौरान है इस्राएल की विजय का समय. लेकिन हज़ोर में यह एकमात्र विनाश स्तर नहीं है। आप इन विनाश स्तरों में जाते हैं और वहां कोई साइनपोस्ट नहीं है जो कहता हो कि इस शहर को किसी ने भी नष्ट कर दिया था - यह एक खुला प्रश्न है।

अब इस पर एक और टिप्पणी, और यहीं पर यह वास्तव में जटिल हो जाता है। आपकी ग्रंथ सूची में जॉन बिम्सन की *री-डेटिंग द एक्सोडस एंड द कॉन्क्वेस्ट* नामक पुस्तक सूचीबद्ध है । जॉन बिम्सन ने इसका एक पुस्तक-लंबा उपचार लिखा है जिसमें वह बहुत तकनीकी तर्क देते हैं, लेकिन उनके तर्क का मुद्दा निर्गमन के लिए पुरातात्विक काल की डेटिंग को बदलना है। मेरे पास पुरातात्विक काल की गणना करने का पारंपरिक तरीका है, और आप काल की स्थापना कैसे करते हैं यह अपने आप में एक जटिल मामला है। लेकिन उनका तर्क यह है कि मध्य कांस्य युग, जो परंपरागत रूप से 1500 में समाप्त होता है, को 1400 के करीब धकेल दिया जाना चाहिए। इसलिए

वह चाहते हैं कि मध्य कांस्य युग की समाप्ति की तारीख लगभग एक शताब्दी कम कर दी जाए। अब मध्य कांस्य युग के अंत में इनमें से कई स्थलों पर विनाश के स्तर हैं, और यदि आप मध्य कांस्य युग की तारीख को 1400 के दशक में कम कर देते हैं, तो मध्य कांस्य युग के अंत में उन विनाश के स्तर को स्थानांतरित कर दिया जाएगा। 1400 के दशक में। इस तरह से जेरिको के विनाश के लिए कैथलीन केनियन की 1530 की तारीख भी 1400 के दशक में सिमटने वाली है। यह एक सतत चर्चा और तर्क है।

6. एलन मैकरे के बाद निष्कर्ष

मुझे लगता है, निष्कर्ष के तौर पर, यदि आप निर्गमन की तिथि के इस प्रश्न पर, इस संस्था के संस्थापक, एलन मैकरे के एक निबंध से, पृष्ठ 7, पृष्ठ के मध्य से नीचे तक आपके उद्धरणों को देखें । मैं उन पैराग्राफों को पढ़ने नहीं जा रहा हूं, लेकिन पृष्ठ 8 पर उनके अंतिम पैराग्राफ पर जा रहा हूं, वे कहते हैं, “ द बहस जैसा को एक जल्दी या देर तारीख का एक्सोदेस अक्सर प्रतीत होना को होना दिया गया में तरीका का ए वकील दृढ़ निश्चय वाला को सिद्ध करना ए विशिष्ट बिंदु, की अपेक्षा बजाय का ए शोधकर्ता मांगना के लिए रोशनी में आदेश को ठानना कुछ वह है नहीं अभी तक ज्ञात। कुछ नया खोज मई निर्माण मामला बिल्कुल अंतिम, लेकिन ऊपर को वर्तमान यह अवश्य होना माना ए सवाल पर कौन हम करना नहीं अभी तक पास पर्याप्त रोशनी। ” अब उन्होंने यह बात कई साल पहले लिखी थी। मुझे नहीं लगता कि उस समय से इस स्थिति में कोई नाटकीय बदलाव आया है। यदि कुछ भी हो, तो मुझे लगता है कि आज शीघ्र निष्कर्ष निकालने के लिए सबूत अधिक मजबूत हैं। मुझे लगता है कि वह जिस बात पर बहस कर रहे हैं वह इस प्रकार के मुद्दों के प्रति उचित कार्यप्रणाली और मानसिक दृष्टिकोण है। मुझे लगता है वह सही है. हमें उस जानकारी की तलाश करनी चाहिए जो तस्वीर को स्पष्ट करने में मदद कर सकती है बजाय इस धर्मयुद्ध में कि यदि आप निर्गमन की प्रारंभिक तिथि से सहमत नहीं हैं जो कुछ लोग सुझाते हैं, तो आप वास्तव में बाइबल को गंभीरता से नहीं लेते हैं, क्योंकि 1 राजा 6:1 कहता है, "निर्गमन के 480 वर्ष बाद सुलैमान के शासन का चौथा वर्ष था," 1446 की प्रारंभिक तिथि को "साबित" करना। ऐसे लोग हैं। मुझे लगता है कि सबूतों को देखते हुए मैकरे का दृष्टिकोण उचित दृष्टिकोण है।

सी. निर्गमन 1:1-2:25 में उत्पीड़न

ठीक है, आइए सी पर चलते हैं, जो निर्गमन 1:1-2:25 में उत्पीड़न है, और हम बाइबिल के पाठ में शामिल होंगे। यदि आप निर्गमन के पहले दो अध्यायों के साथ-साथ अध्याय 5 में पुआल के साथ या उसके बिना ईंटें बनाने के संदर्भ में उत्पीड़न को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि आप जो देखते हैं वह यह है कि समय के साथ उत्पीड़न के कई चरण थे। मिस्रवासियों को लगा कि उन्हें इस्राएलियों को काम पर लगाना चाहिए, इसका कारण उनका गुणन और संख्या थी।

1. निर्गमन 1:7-10 उत्पीड़न अध्याय 1 श्लोक 7 में आपने पढ़ा, "इस्राएली फूले-फलें, और बहुत बढ़ गए, यहां तक कि देश उन से भर गया।" वह कथन हमें जो बताता है वह पुष्टि करता है कि उत्पत्ति के अंतिम अध्यायों के बाद से क्या चल रहा था - यदि आप उत्पत्ति 47:27 को देखें - जब यूसुफ के भाई और उसके पिता अंततः उसके पीछे मिस्र चले गए और बस गए, तो हमने पढ़ा, "इस्राएली वहां बस गए मिस्र, गोशेन क्षेत्र में। उन्होंने वहां संपत्ति अर्जित की और फल-फूल गए और उनकी संख्या में बहुत वृद्धि हुई।" तो पहले से ही यूसुफ के समय में, यह आपको बता रहा है कि इस्राएली बढ़ रहे थे। उत्पत्ति के अंत और निर्गमन के आरंभ के बीच 480 वर्ष की अवधि है।

निर्गमन के 1:7 में यह कहा गया है कि वे अत्यधिक संख्या में होते जा रहे हैं । तो फिरौन आयत 10 में कहता है, "आओ, हमें उनके साथ चतुराई से निपटना चाहिए अन्यथा वे और भी अधिक हो जायेंगे। और यदि युद्ध छिड़ गया, तो वे हमारे शत्रुओं से मिल जायेंगे, हमारे विरुद्ध लड़ेंगे , और देश छोड़ देंगे।" मुझे लगता है कि दिलचस्प बात यह है कि वे वास्तव में नहीं चाहते कि वे देश छोड़ें; वे चाहते हैं कि वे वहीं रहें। वे जो चाहते हैं वह उनका शोषण करना और उनका उपयोग करना और उनकी उपस्थिति से लाभ उठाना है, लेकिन वे उन्हें नियंत्रित करना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने अपने ऊपर दास स्वामियों को नियुक्त करने का निश्चय किया—पद 11. उन्होंने जबरन श्रम के द्वारा उन पर अत्याचार करने के लिए उनके ऊपर दास स्वामियों को नियुक्त किया। और आप कह सकते हैं कि यह उत्पीड़न या बंधन का पहला चरण है।

अब कुछ लोगों ने कहा है कि यह उत्पीड़न मानव इतिहास में यहूदी-विरोध का पहला उदाहरण है - कुछ ऐसा जो उस दिन से आज तक चल रहा है। यह उल्लेखनीय है कि ऐसा लगता है

कि यह कुछ ऐसा है जो अभी भी हमारे पास है। आप ऐसा कह सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि इससे कहीं अधिक कुछ है - यहूदी-विरोध से कहीं अधिक गहरा कुछ। मुझे लगता है कि जो कुछ आप यहां पाते हैं उसका मूल उत्पत्ति 3:15 में निहित किसी चीज़ की अभिव्यक्ति है, या मनुष्य के पाप में गिरने के बाद, भगवान कहते हैं कि स्त्री के वंश और सर्प के वंश - शैतान के बीच संघर्ष होगा . शैतान के राज्य के विरोध में आपके पास परमेश्वर का राज्य है। आपके पास दो राज्य हैं जो एक-दूसरे से टकराते हैं और शत्रुता रखते हैं। यहाँ उन दो लोगों के बीच की शत्रुता की अभिव्यक्ति है। तो उस पहले चरण का पहला कदम इस्राएलियों को परेशान करने के लिए उनके ऊपर दास स्वामियों को बिठाना है ताकि वे बहुत अधिक या शक्तिशाली न हो जाएं ताकि वे मिस्र के दुश्मन के साथ मिलकर मिस्र की अपनी सुरक्षा के लिए खतरा बन सकें।

2. निर्गमन 1:12-14 कठिन परिश्रम लेकिन समस्या यह है कि जैसे ही वे ऐसा करते हैं, क्या होता है? श्लोक 12, "जितना अधिक उन पर अत्याचार किया गया, उतना ही वे बढ़ते और फैलते गए।" उत्पीड़न काम नहीं आया, इसलिए मिस्रवासी इस्राएलियों से डरने लगे। तो उन्होंने क्या किया? ज़ुल्म के उस पहले चरण का दूसरा चरण होता है। वे उन्हें कोड़े मारने पर उतारू हो गये। उन्होंने उन पर और अधिक अत्याचार किया। श्लोक 14, “उन्होंने खेतों में कड़ी मेहनत, ईंट और गारे और हर तरह के काम से अपने जीवन को कड़वा बना लिया। और उनके सारे कठिन परिश्रम के माध्यम से, मिस्रियों ने उनका बेरहमी से इस्तेमाल किया। उन्होंने इस्राएलियों की संख्या में वृद्धि को नियंत्रित करने की आशा से, उत्पीड़न बढ़ा दिया। इसलिए वे बंधन को और अधिक गंभीर बना देते हैं। तो पहला चरण दो चरणों में कठोर बंधन है।

3. निर्गमन 1:16-18 पुरुष बच्चों की हत्या - दाइयां

लेकिन यह काम नहीं करता है इसलिए उत्पीड़न का दूसरा चरण शुरू होता है और वह है नर बच्चों की हत्या। फिर से आपके पास दो चरण हैं। पहला चरण पद 16 में है जहां फिरौन इब्रानी दाइयों से कहता है, “जब तुम इब्रानी स्त्रियों को प्रसव के समय सहायता करो, और प्रसव की चौकी पर पड़े हुए को देखो, यदि लड़का हो, तो उसे मार डालो; परन्तु यदि वह लड़की है, तो उसे जीवित

रहने दो।" कम से कम वहां उन्होंने सोचा कि वे पुरुषों को मारकर सैन्य खतरे की पद्धति को नियंत्रित कर सकते हैं। लेकिन वह फिर से निराश है क्योंकि हिब्रू दाइयां सहयोग नहीं करती हैं। हम अगली आयत में पढ़ते हैं, "दाइयां परमेश्वर का भय मानती थीं और उन्होंने वह नहीं किया जो मिस्र के राजा ने उनसे करने को कहा था, परन्तु लड़कों को जीवित रहने दिया।" तो आपको वहां दूसरा कदम मिलता है, और इन दाइयों को इब्रानियों के नर बच्चों को मारने का निर्देश देने के बजाय, आप श्लोक 18 में पढ़ते हैं कि राजा ने बुलाया और उनसे पूछा कि क्यों।

4. निर्गमन 1:22 - नर बच्चों को नील नदी में प्रवाहित करना फिर आयत 22 में फिरौन ने अपने सभी लोगों को यह आदेश दिया: जो भी लड़का पैदा हो, तुम्हें नील नदी में फेंक देना। इसलिए निर्गमन 1:22 में सभी नर बच्चों को मारने का आदेश मिस्र के सभी लोगों पर लागू किया गया है ताकि प्रत्येक नर बच्चे को नील नदी में फेंक दिया जा सके। यह स्पष्ट रूप से प्रत्येक हिब्रू पुरुष बच्चे के बारे में नहीं कहता है, लेकिन मुझे लगता है कि इस संदर्भ में, फोकस इसी पर है। प्रत्येक इब्री नर बच्चे को नील नदी में डाल दो। तो दो कदम फिर. नहूम सरना, जो एक्सोडस पर यहूदी प्रकाशन सोसायटी में एक्सोडस टिप्पणी लिखते हैं, यह टिप्पणी करते हैं, "संप्रभु के भ्रष्ट कानून का पालन करने और भगवान के उच्च नैतिक कानून के प्रति निष्ठा के बीच एक अपूरणीय संघर्ष का सामना करते हुए, दाइयों ने इसके पक्ष में चुनाव किया। नैतिकता की उत्कृष्ट अनिवार्यता. हालाँकि, कानून के साथ उनके गैर-अनुपालन की सार्वजनिक रूप से घोषणा नहीं की गई थी, लेकिन स्पष्ट विवेकपूर्ण आधार पर निजी तौर पर प्रभाव डाला गया था। यह अत्याचार "नैतिक अनिवार्यता की रक्षा में सविनय अवज्ञा का इतिहास का पहला सूचित कार्य है।" यह एक दिलचस्प कथन है- "नैतिक अनिवार्यता की रक्षा में सविनय अवज्ञा।" फिरऔन ने दाइयों से कहा, सब बालकों को मार डालो, और यह कहता है, कि वे परमेश्वर से डरते थे। उन्होंने वह नहीं किया जो मिस्र के राजा ने उन से करने को कहा था; उन्होंने लड़कों को जीवित रहने दिया। वह आगे कहते हैं कि ऐसा कहा जाता है कि वे ईश्वर के भय से प्रेरित थे और अक्सर नैतिक और नैतिक व्यवहार के मानदंडों से जुड़ी प्रशंसा करते थे - ईश्वर का भय ईश्वर की उस अवधारणा को दर्शाता है जो मानव जाति से नैतिक मांग करता है। यह बुराई पर अंतिम नियंत्रण और इस प्रकार अच्छाई के लिए सर्वोच्च प्रेरणा के रूप में

कार्य करता है। ईश्वर का भय - भलाई के लिए प्रोत्साहन - व्यवहार पर अंतिम संयम। तुम परमेश्वर से दूर हो जाते हो, और कोई रोकटोक नहीं है।

5. उलटाव - मूसा लेकिन आपने देखा कि यहां क्या होता है: ये सभी प्रयास विफल हो गए हैं ताकि सभी मिस्रवासियों को उस आदेश के बाद - किसी भी नर बच्चे को नील नदी में फेंक दें - क्या होता है? मूसा का जन्म हुआ और उसे उस टोकरी में रखा गया, और उसका जीवन संरक्षित किया गया, और वह फिरौन के घर में बड़ा हुआ और अंततः वह उद्धारकर्ता बन गया जो इज़राइल को मिस्र के बंधन से मुक्त कराता है। इसलिए यह पाठ मिस्रवासियों के बीच इस्राएलियों को नियंत्रित करने के इन प्रयासों की निरर्थकता पर प्रकाश डालता है।

6. मूसा की वापसी के बाद उत्पीड़न का दूसरा चरण - भूसे के बिना ईंटें मैं यहां अध्याय 5 का उल्लेख एक अन्य अध्याय के रूप में करता हूं जो उत्पीड़न का हिस्सा है। निर्गमन अध्याय 5 मूसा के वापस आने और फिरौन से जंगल में जाने और प्रभु की आराधना करने की अनुमति माँगने के बाद का है। फिरौन यह अनुमति नहीं देता, लेकिन वह क्या करता है? हम अध्याय 5 के छंद 6 में पढ़ते हैं, "उसी दिन फिरौन ने लोगों के प्रभारी दास चालकों और सरदारों को यह आदेश दिया: 'अब तुम लोगों को ईंटें बनाने के लिए भूसा नहीं देना। इसके बजाय उन्हें अपना खुद का भूसा इकट्ठा करने को कहें, लेकिन उन्हें पहले जितनी ही संख्या में ईंटें बनाने को कहें।'" तो जाहिर तौर पर ईंटों को बनाने के लिए भूसे का इस्तेमाल किसी तरह से किया गया था, और इसकी आपूर्ति की गई थी; लेकिन अब उसके अनुरोध के कारण, फिरौन ने पुआल उपलब्ध न कराकर उन पर अत्याचार तेज कर दिया है, और कहा है कि उन्हें अपना पुआल स्वयं ढूंढना होगा। आप पद 12 पर जाएँ, जहाँ हम पढ़ते हैं। "लोग भूसे के रूप में उपयोग करने के लिए खूंटी इकट्ठा करने के लिए पूरे मिस्र में तितर-बितर हो गए। दास-चालक उन पर दबाव डालते रहे, और कहते रहे, 'जितना तुम्हारे पास भूसा था, उसी प्रकार तुम्हें प्रतिदिन का काम भी पूरा करना चाहिए।' और फिरौन के दासोंके द्वारा ठहराए हुए प्रधानोंने उन्हें यह कहकर पीटा, कि तुम ने पहिले दिन की नाई अपना कोटा पूरा क्यों नहीं किया? आपको ईंटों का अपना पूरा कोटा तैयार करना होगा।" इस अध्याय का अंत इस बारे में बताता है

कि किस तरह भूसे को रोककर उत्पीड़न को बढ़ाया गया था - इस्राएलियों को अपना भूसा लेने के लिए मजबूर किया गया था और कभी-कभी भूसे के बजाय भूसे का उपयोग करना पड़ता था। इससे यह प्रश्न उठता है कि ईंटें बनाने में पुआल का क्या कार्य था। अपने उद्धरणों के नीचे पृष्ठ 8 से लेकर पृष्ठ 11 तक देखें। इसे एलन मैकरे द्वारा "द रिलेशन ऑफ़ आर्कियोलॉजी टू द बाइबल" से लिया गया है जहाँ उन्होंने इस पर चर्चा की है और उन्होंने जो बताया वह यह है कि ऐसा माना जाता था कि पुआल का उपयोग एक बंधन एजेंट के रूप में किया जाता था। दूसरे शब्दों में, यदि आपके पास ईंट के माध्यम से जाने वाला पुआल का एक लंबा टुकड़ा है, तो यह मिट्टी को एक बंधन एजेंट के रूप में एक साथ रखता है। लेकिन इसमें समस्या यह थी कि फिर पराली कैसे काम करती थी? यदि आपको भूसे की लंबी किस्में नहीं मिल पातीं तो इसका क्या मतलब है? ईंट में पराली डालने का क्या मतलब है? वह कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों का हवाला देते हैं जो संकेत देते हैं कि कुछ प्रकार की मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ रखने से कुछ रासायनिक प्रतिक्रिया के माध्यम से मिट्टी अधिक व्यावहारिक, अधिक प्लास्टिकयुक्त हो जाती है। मैकरे का सुझाव यह है कि मिस्रवासियों ने कुछ ऐसा खोजा था जिसके बारे में वे पूरी रसायन शास्त्र को नहीं समझ पाए होंगे, लेकिन यदि आप मिट्टी के साथ कार्बनिक पदार्थ मिलाते हैं, तो इससे मिट्टी से ईंटों को ढालना आसान हो जाता है, बजाय इसके कि यदि आपके पास मिट्टी न होती। कार्बनिक पदार्थ। यह इज़रायल पर अत्याचार की तीसरी तीव्रता का एक दिलचस्प पक्ष है।

7. उत्पीड़न पर

मोटयेर तो यह सब उत्पीड़न के अधीन है, निर्गमन 1:1-2:25 और अध्याय 5। पृष्ठ के नीचे, अपने उद्धरण पृष्ठ 11 को देखें। जे. मोटयेर , जिन्होंने *ओल्ड टेस्टामेंट कॉवेनेंट थियोलॉजी* नामक व्याख्यान प्रकाशित किया , इस उत्पीड़न के बारे में यह बयान देते हैं। वह कहते हैं, " यहां तक कि अधिक महत्वपूर्ण बजाय वास्तविक घटना का शब्द 'संविदा' है परिस्थिति में कौन किताब का एक्सोदेस है तय करना। मैं पास पहले से उल्लिखित नरसंहारक आवेग का फिरौन. यह है संतुष्ट का अध्याय 1: राजा का दुनिया, फिरौन, था दृढ़ निश्चय वाला पर बोलना विनाश का यह लोग।" अब मुझे नहीं लगता कि फिरौन पूर्ण विनाश पर कृतसंकल्प था। मुझे लगता है कि वह उन पर

नियंत्रण रखना चाहता था।' लेकिन मुझे नहीं लगता कि इससे वास्तव में उनकी बात पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ेगा। वह कहते हैं, " थोड़ा किया वह जानना वह वह था में यह रास्ता चुनौतीपूर्ण वादा वह ईश्वर था निर्मित को इब्राहीम, में अन्य शब्द अधिकांश मौलिक असलियत के बारे में लोग का इजराइल। के लिए पर शुरुआत का भगवान का लेन-देन साथ अब्राम, जैसा वह तब था में अध्याय 12, वहाँ था वादा का संरक्षण का अब्राहम और उसका वंशज . ईश्वर कहा 'मैं इच्छा आशीर्वाद देना वे WHO आशीर्वाद देना आप, और उसका WHO शाप आप मैं इच्छा अभिशाप।' फिरौन, इसलिए, सभी अनिच्छित था सेटिंग वह स्वयं ऊपर को चुनौती वाचा. कब उसका नियम था चुनौतीः ईश्वर गुलाब को रक्षा करना यह।" वह उन्हीं लोगों पर अन्धेर कर रहा था, जिनके विषय में परमेश्वर ने कहा था, जो कोई तुझे आशीर्वाद देगा, मैं उसे आशीर्वाद दूंगा; जो कोई तुझे शाप देगा, मैं उसे शाप दूंगा। " इसलिए दोनों इसका शब्दावली और भी इसका अपना चुना सेटिंग प्रचार को हम वह किताब का एक्सोदेस है विस्तार का नियम आख्यान।" दूसरे शब्दों में, वह वादा जो परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था कि परमेश्वर इब्राहीम के माध्यम से एक वंश उत्पन्न करेगा, कि इब्राहीम से एक राष्ट्र निकलेगा, और वह उस राष्ट्र पर अपना आशीर्वाद डालेगा जो आगे बढ़ रहा है। यह अभी भी कुछ ऐसा है जो निर्गमन के शुरुआती अध्यायों में मिस्रियों और इस्राएलियों के बीच इस सभी बातचीत में बहुत वास्तविक है।

डी.उद्धारकर्ता - मूसा - निर्गमन 3:1-7:13

आइए डी पर चलते हैं , "उद्धारकर्ता - निर्गमन 3:1 से 7:13।" निस्संदेह, उद्धारकर्ता मूसा है जो अध्याय 1 के अंत में पुरुष पीढ़ी की हत्या के अंतिम चरण के ठीक बाद पैदा हुआ है। अध्याय 2, मूसा का जन्म होता है और वह नेता बन जाता है जो इज़राइल को मिस्र से बाहर निकालता है। मूसा निश्चित रूप से संपूर्ण बाइबिल के महानतम व्यक्तित्वों में से एक है; जब हम बाइबल के महान पात्रों के बारे में सोचते हैं तो हम मूसा, अब्राहम, डेविड और नए नियम में ईसा मसीह के बारे में सोचते हैं। लेकिन वह संपूर्ण मानव इतिहास की महान हस्तियों में से एक हैं। मुझे नहीं लगता कि इस बारे में कोई सवाल है। उनकी ऐतिहासिकता-अर्थात, ऐतिहासिक संदर्भ में एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में उनका वास्तविक अस्तित्व जिसमें ये आख्यान स्थापित हैं-मैं कहूंगा कि आज आम तौर पर

स्वीकार किया जाता है लेकिन पूरी तरह से नहीं। अभी भी बाइबल के आलोचक मौजूद हैं जो सवाल करते हैं कि क्या मूसा एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति थे या प्राचीन परियों की कहानियों से किसी प्रकार की पौराणिक या पौराणिक रचना थे। जॉन वैन सेटर्स, जो पुराने नियम के बहुत सक्रिय विद्वान हैं, ने कई किताबें लिखी हैं। 1987 में प्रकाशित *एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलिजन ऑन मूसा* में उनका लेख कहता है, "ऐतिहासिक मूसा की खोज एक व्यर्थ अभ्यास है। वह अब केवल किंवदंती तक ही सीमित है।" दूसरे शब्दों में, ऐसे किसी व्यक्ति का उदाहरण है जो यह नहीं सोचता कि मूसा कभी जीवित था। जर्मन विद्वान मार्टिन नोथ और गेरहार्ड वॉन रेड दोनों ने इज़राइल का विश्व इतिहास लिखा और इसमें मूसा की अपेक्षाकृत छोटी भूमिका बताई । उन्हें लगता है कि कनान देश में बड़े पैमाने पर हुए पलायन में इजराइल के पास कोई लोग नहीं थे। तो आपके आसपास इस प्रकार के नकारात्मक आलोचक हैं।

लेकिन यदि आप पृष्ठ 12 पर अपने उद्धरणों को देखें, तो वहां दूसरी प्रविष्टि जॉन ब्राइट के *द के तीसरे संस्करण से है इज़राइल का इतिहास*. जॉन ब्राइट डब्ल्यूएफ अलब्राइट के छात्र थे जिन्होंने इज़राइल के इतिहास पर एक मानक पाठ लिखा था। ध्यान दें कि वह क्या कहता है, "हालाँकि हम उसके करियर के बारे में कुछ नहीं जानते हैं, बाइबल हमें जो बताती है उसे छोड़कर" - दूसरे शब्दों में, मूसा के बारे में बाइबिल से बाहर कोई संदर्भ नहीं है। यही एक कारण है कि उसके अस्तित्व पर सवाल उठाया जाता है- " विवरण का कौन हम पास नहीं साधन का परिक्षण, वहाँ कर सकना होना नहीं संदेह वह वह था, जैसा बाइबिल चित्रण उसका, महान संस्थापक का इजराइल का आस्था। प्रयास को कम करना उसका हैं अत्यंत असंबद्ध आयोजन का एक्सोदेस और सिनाई ज़रूरत होना ए महान व्यक्तित्व उनके पीछे। और ए आस्था जैसा अद्वितीय जैसा इजराइल का मांगों ए संस्थापक जैसा निश्चित रूप से जैसा करता है ईसाई धर्म-या इस्लाम, के लिए वह मामला। को अस्वीकार करना वह भूमिका को मूसा चाहेंगे ताकत हम को किसी स्थिति में रखना एक और व्यक्ति का वही नाम! वास्तव में हम मूसा के जीवन के बारे में काफी कुछ जानते हैं - माना जाता है कि यह पूरी तरह से बाइबिल के अभिलेखों पर आधारित है। लेकिन मूसा के समय में इज़राइल के लोगों के जीवन के बारे में जानकारी के स्रोत के रूप में बाइबिल के रिकॉर्ड को अयोग्य क्यों ठहराया जाना चाहिए? जब हम मूसा के बारे में प्रगति करेंगे तो हमें काफ़ी सामग्री मिलेगी।

मुझे लगता है कि जहां तक उसके महत्व या महत्व की बात है, वोस इसे बहुत अच्छी तरह से आपके उद्धरणों के पृष्ठ 12 पर फिर से रखता है, जहां वह मूसा को पूर्वव्यापी और संभावित दोनों तरह से देखता है। वह कहते हैं, " के लिए एक चीज़ वह था, पूर्वव्यापी माना, वाद्य में लाना महान कुलपति का वादे को एक उत्पन्न होनेवाला पूर्ति, पर कम से कम में उनका बाहरी, अस्थायी अवतार. इजराइल बन गया में सच ए महान राष्ट्र, और यह था देय नहीं केवल को उनका तेज़ बढ़ोतरी; संगठन प्राप्त द्वारा मूसा सक्रिय उन्हें को प्राप्त राष्ट्रीय सुसंगति. मूसा वैसे ही अगुआई की उन्हें को सीमा का वादा भूमि ।" वह कनान देश में यरीहो है। मूसा वादा किए गए देश में प्रवेश के ठीक कगार पर आ गया, उसने उस पार देखा और उसे देखा, लेकिन वास्तव में प्रवेश नहीं किया। इसलिए पूर्वव्यापी रूप से मूसा पितृसत्तात्मक वादों को आरंभिक पूर्ति के लिए लाता है। पुराने नियम के धार्मिक विकास में मूसा का प्रमुख स्थान है।

उसे न केवल भविष्यवक्ताओं के उत्तराधिकार के शीर्ष पर रखा गया है, बल्कि उनसे पहले भी रखा गया है। मूसा के समान कोई पैगम्बर नहीं था । वह सिर्फ एक पैगम्बर नहीं थे, बल्कि सभी पैगम्बरों में सबसे महान थे। उसका अधिकार बाद के युगों तक फैला हुआ है। बाद के भविष्यवक्ताओं ने कुछ भी नया नहीं बनाया, हालाँकि उन्होंने कुछ चीज़ों की भविष्यवाणी की थी। बाद के भविष्यवक्ताओं ने इज़राइल को उस नींव पर वापस बुलाया जो मूसा ने रखी थी। अब वे उन चीज़ों के बारे में बात करते हैं जो परमेश्वर भविष्य में करेगा, उनके समय से परे। लेकिन मूल रूप से वे इज़राइल को उसकी मोज़ेक नींव पर वापस बुलाते हैं। वोस आगे कहते हैं, “ यह है सत्य, मूसा कर सकना होना समन्वित साथ भविष्यवक्ता. फिर भी नबियों खुद हैं स्पष्ट रूप से सचेत का अद्वितीय पद का मूसा. वे रखना उसका काम नहीं इसलिए अधिकता पर ए पंक्ति साथ उनका अपना, जैसा साथ अति विशाल युगांतशास्त्रीय काम का यहोवा के लिए उसका लोग अपेक्षित में बाद वाला दिन. अनुसार को नंबर 12:7, मूसा था तय करना ऊपर सभी भगवान का घर। यह है पूरी तरह से में रखते हुए साथ यह भावी आयात का मूसा और उसका काम, वह उसका आकृति का अधिग्रहण ठेठ अनुपात को एक असामान्य डिग्री। वह मई होना अनुकूल ढंग से बुलाया धन देकर बचानेवाला का पुराना वसीयतनामा। ” और निःसंदेह उस अर्थ में, वह मसीह की प्रतीक्षा कर रहा है। “ लगभग सभी शर्तें में उपयोग के लिए पाप मुक्ति का नया नियम कर सकना होना पता

लगाया पीछे को उसका समय।" हम उसके जन्म के साथ इस पर काम नहीं करने जा रहे हैं, लेकिन उसकी मुक्ति निश्चित रूप से मिस्र की भूमि में निर्गमन में जो हो रहा है, उसके साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी। तो ये मूसा के बारे में कुछ टिप्पणियाँ हैं।

ई. विपत्तियाँ, निर्गमन 7:14-11:10 आइए ई पर चलते हैं, "विपत्तियाँ, निर्गमन 7:14-11:10।" मैं उल्लेख कर सकता हूं - भजन 78:43-51 और भजन 105:27-36 में काव्यात्मक आख्यानों में भी विपत्तियों का वर्णन किया गया है। वे ऐतिहासिक स्तोत्र हैं जो काव्यात्मक रूप में इज़राइल के इतिहास की घटनाओं को दर्ज करते हैं। बेशक, निर्गमन वह महत्वपूर्ण घटना थी जिसके कारण इज़राइल का गठन हुआ। चमत्कारी घटनाओं की इन श्रृंखलाओं को, जिनके कारण फिरौन ने इस्राएलियों को बंधन से मुक्त कराया, "विपत्तियाँ" के रूप में संदर्भित करना आम बात है। यह एक शब्द है जिसका उपयोग बाइबिल पाठ में किया गया है। यदि आप 9:14 को देखते हैं, तो आप पढ़ते हैं, "इस बार मैं तुम्हारे विरुद्ध, तुम्हारे अधिकारियों और तुम्हारी प्रजा के विरुद्ध अपनी विपत्तियों की पूरी शक्ति भेजूँगा।" मेरी विपत्तियों की पूरी शक्ति - यह एक शब्द है जो *नागाः से आया है*। लेकिन अक्सर इन "विपत्तियों" को बाइबिल पाठ में या तो संकेत या चमत्कार के रूप में संदर्भित किया जाता है। संकेत *' ओटी' हैं*, और आश्चर्य *मोफेट है*। एनआईवी दिलचस्प ढंग से उस "आश्चर्य" का अनुवाद कभी-कभी "चमत्कार" के रूप में करता है। लेकिन दैवीय हस्तक्षेपों की इस श्रृंखला को नामित करने के लिए "संकेतों और चमत्कारों" का उपयोग "प्लेग" की तुलना में अधिक बार किया जाता है, जिसके कारण मिस्र से पलायन हुआ। और मुझे लगता है कि भाषा-संकेत और चमत्कार-सहायक है क्योंकि यह हमें इन घटनाओं के महत्व और इरादे के बारे में अधिक जानकारी देती है। जब आप पूछते हैं कि ईश्वर क्या कर रहा था और मिस्रियों और इस्राएलियों पर घटनाओं की इन श्रृंखलाओं को लाने के पीछे उसका इरादा क्या था, तो मुझे लगता है कि आपको फिरौन से मूसा के अनुरोध को देखकर शुरुआत करनी होगी, "इस्राएलियों को जंगल में जाने दो और पूजा करने दो" ।" अध्याय 5 में, पहले कुछ छंद, आपने पढ़ा, "मूसा और हारून फिरौन के पास गए, और यह यहोवा है" - एनआईवी कहता है प्रभु या यहोवा - इसराइल के देवता का उचित नाम, शायद हम नहीं जानते कि यह कैसे हुआ उच्चारित किया जाता है- "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, कहता है,

'मेरे लोगों को जाने दो ताकि वे जंगल में जाकर आराधना कर सकें।'" फिरौन की प्रतिक्रिया क्या है? “यहोवा कौन है कि मैं उसकी आज्ञा मानकर इस्राएल को जाने दूं? मैं यहोवा को नहीं जानता! और मैं इस्राएल को जाने नहीं दूँगा!”

यदि आप अध्याय 7:3 पर जाएँ, तो वहाँ प्रभु कहते हैं, “मैं फिरौन के हृदय को कठोर कर दूँगा, और चाहे मैं मिस्र में अपने चिन्ह और चमत्कार बहुत बढ़ाऊँ, तौभी वह तेरी न सुनेगा। तब मैं न्याय के पराक्रम से मिस्र पर अपना हाथ रखूंगा। मैं अपने दल अर्थात् इस्राएलियोंको बाहर ले आऊंगा, और जब मैं मिस्र के विरूद्ध अपना हाथ बढ़ाकर इस्राएलियोंको वहां से निकालूंगा तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। दूसरे शब्दों में, संकेतों और चमत्कारों की यह श्रृंखला क्यों? फिरौन ने कहा था, “मैं यहोवा को नहीं जानता। मैं तुम्हें जाकर यहोवा की आराधना क्यों करने दूं?” ये चिन्ह और चमत्कार इसलिए किये जाते हैं ताकि फिरौन जान ले कि यहोवा कौन है—कि वह अस्तित्व में है और वह शक्तिशाली है। यह एक ऐसा विषय बन जाता है जो वास्तव में यहां चलता है। विपत्तियाँ 5:2 में फिरौन के प्रश्न का यहोवा का उत्तर है—यहोवा कौन है? मैं यहोवा को नहीं जानता।

हमने 7:5 को देखा, अब 7:16 और 17 को देखें, "फिर उस से कह, हे फिरौन, इब्रियों के परमेश्वर यहोवा ने मुझे तुझ से यह कहने को भेजा है, कि मेरी प्रजा को जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें।" जंगल, परन्तु अब तक तुम ने मेरी न सुनी।” यहोवा यही कहता है, "इससे तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं।" यहोवा कौन है? मैं यहोवा को नहीं जानता। 9:13 और उसके बाद देखें। “यहोवा ने मूसा से कहा, भोर को उठकर फिरौन का साम्हना करना, और उस से कहना, इब्रियों का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगोंको जाने दे, कि वे मेरी उपासना करें । इस समय मैं तुम्हारे विरूद्ध, तुम्हारी प्रजा के विरूद्ध, तुम्हारे हाकिमों के विरूद्ध अपनी विपत्तियों की पूरी शक्ति भेजूंगा।" क्यों? "ताकि तुम जान लो कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई नहीं।" पृथ्वी।" वह ऐसा तुरंत कर सकता था। वह नहीं करता. "परन्तु मैं ने तुम्हें इसी लिये खड़ा किया है, कि मैं तुम्हें अपनी शक्ति दिखाऊं, और अपने नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर करो।" यहोवा प्रदर्शित करने जा रहा है कि वह कौन है, और वह शक्तिशाली है। ताकि फ़िरौन यह पहचानने के अलावा और कुछ न कर सके कि वह अस्तित्व में है और वह शक्तिशाली है। अध्याय 9 की आयत 27 को देखें, “फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। उसने कहा, 'इस बार मैंने पाप किया है,' यहोवा सही है; मैं और मेरे लोग ग़लत

हैं. यहोवा से प्रार्थना करो क्योंकि हमारा बहुत हो चुका है और मैं तुम्हें जाने दूँगा।' मूसा ने उत्तर दिया, 'जब मैं नगर से बाहर जाऊंगा, तब यहोवा से प्रार्थना में हाथ फैलाऊंगा। गरजना बन्द हो जाएगा और ओले फिर न गिरेंगे, तब तुम जान लोगे कि पृथ्वी यहोवा की है। परन्तु मैं जानता हूं कि तुम और तुम्हारे अधिकारी अब भी प्रभु परमेश्वर यहोवा का भय नहीं मानेंगे।" इसलिए विपत्तियां फिरौन के लिए यहोवा के अस्तित्व और शक्ति का एक प्रदर्शन हैं क्योंकि मूसा के साथ उस पहली मुठभेड़ में, फिरौन ने कहा कि वह नहीं जानता था यहोवा कौन है?

लेकिन यह सिर्फ मिस्रवासियों के लिए ही प्रदर्शन नहीं था, यह इस्राइलियों के लिए भी एक प्रदर्शन है। अध्याय 10, पहले कुछ छंदों को देखें, “यहोवा ने मूसा से कहा, 'मैं ने उसके और उसके हाकिमों के मन को कठोर कर दिया है, कि मैं उनके बीच ये अद्भुत चिन्ह और चमत्कार दिखाऊं, और तुम अपने बच्चों और अपने बच्चों को बता सको पोते-पोतियों, मैं ने मिस्रियों के साथ कैसा कठोरता से व्यवहार किया, और उनके बीच कैसे अपने चिन्ह दिखाए, और तुम जान लो कि मैं यहोवा हूं। इसलिए न केवल मिस्रवासियों को इससे सीखना है, बल्कि इस्राएलियों को भी इससे सीखना है। इसलिए वे ईश्वर के अस्तित्व, शक्ति का अनुभव कर सकते हैं, और इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचा सकते हैं, "ताकि आप जान सकें कि मैं यहोवा हूं।"

व्यवस्थाविवरण 4:34 को देखें जब मूसा बाद में इस बारे में टिप्पणी कर रहा है। वह कहते हैं, " क्या किसी ईश्वर ने कभी परीक्षणों के द्वारा, चमत्कारों के द्वारा, चमत्कारों के द्वारा, युद्ध के द्वारा, शक्तिशाली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा, या महान और भयानक कामों के द्वारा, एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से अपने लिए लेने का प्रयास किया है, जैसा कि सभी करते हैं? तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिये क्या क्या किया? श्लोक 35 को देखें। क्या अद्भुत कथन है! “तुम्हें ये चीज़ें दिखाई गईं,” क्यों?” “ताकि तुम जान लो कि यहोवा ही परमेश्वर है।” उसके अलावा कोई दूसरा नहीं है. “ये बातें तुम्हें इसलिये दिखाई गईं, कि तुम जान लो कि यहोवा ही परमेश्वर है।” और फिर वह अतिरिक्त कथन, जो पुराने नियम के रहस्योद्घाटन में इस बिंदु पर स्पष्ट और सरल है, इतना मजबूत कथन है जितना आपको कहीं भी मिलेगा, "कोई अन्य ईश्वर नहीं है।" ईश्वर केवल एक है।

अब, इस्राएलियों को इसकी आवश्यकता थी। यदि आप निर्गमन 5 में वापस जाते हैं, तो

अध्याय 5 की शुरुआत में फिरौन से एक प्रश्न पूछा गया था, फिरौन ने कहा कि मैं यहोवा को नहीं जानता, और फिर बिना भूसे की ईंटों से उत्पीड़न हुआ। और इस्राएलियों को यह पसंद नहीं है इसलिए यदि आप अध्याय के अंत तक जाते हैं, तो आप श्लोक 21 में देखते हैं, श्रम बलों के ये मुखिया मूसा और हारून के पास आते हैं और कहते हैं, "प्रभु आप पर दृष्टि करें और आपका न्याय करें।" . तू ने हम को फ़िरौन और उसके हाकिमों के लिये दुर्गन्ध बना दिया है, और हमें मार डालने के लिये उनके हाथ में तलवार दे दी है।" मूसा ने यहोवा की ओर फिरकर प्रार्थना की, "तू ने अपनी प्रजा पर विपत्ति क्यों डाली, और अपनी प्रजा को क्यों नहीं बचाया?" और 6:9 में, "मूसा ने इस्राएलियों को इसकी सूचना दी; उन्होंने अपनी निराशा और बंधन के कारण उसकी बात नहीं मानी।" इस्राएली हतोत्साहित थे, और प्रभु उन्हें अपने अस्तित्व का प्रदर्शन करने जा रहे थे।

हम इन संकेतों और चमत्कारों के बारे में बात करते हैं, और ' *ओटी*' हिब्रू में संकेत के लिए शब्द है / *द थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट* (TWOT) कहता है, "एक संकेत एक क्रिया, घटना है, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी चीज़ की प्रामाणिकता को पहचानता है, सीखता है, याद रखता है या मानता है।" यहाँ यही चल रहा है. फिरौन और इस्राएल दोनों चिन्हों और चमत्कारों में जो चल रहा है उसके माध्यम से यहोवा की प्रामाणिकता के बारे में सीख रहे हैं

1. दस विपत्तियाँ दस विपत्तियाँ हैं । उन्हें दसवीं प्लेग में चरमोत्कर्ष के साथ तीन के तीन सेटों में व्यवस्थित किया गया है, जो कि पहले जन्मे बच्चे की मृत्यु है। तो पहले नौ विपत्तियों को तीन-तीन विपत्तियों के तीन समूहों में व्यवस्थित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक का चरमोत्कर्ष पहले जन्मे बच्चे की मृत्यु में होता है। प्रत्येक समूह में पहली प्लेग - संख्या 1, 4, और 7 - का परिचय फिरौन को सुबह-सुबह दी गई एक चेतावनी से होता है जब वह नील नदी पर गया था। और आप इसे 7:15 में देखते हैं जहां यह कहा गया है, "भोर को फिरौन के पास जाओ जब वह टहलने को निकले। उससे मिलने के लिए नील नदी के तट पर प्रतीक्षा करें।" निर्गमन 8:20 कहता है, "तब यहोवा ने मूसा से कहा, भोर को जब फिरौन जल की ओर जाए, तब उसका साम्हना करना, और उस से कहना।" और 9:13, "यहोवा ने मूसा से कहा, भोर को उठकर फिरौन से कह, यहोवा यों कहता है।" तो आपको उन तीन सेटों में से प्रत्येक के लिए पहली प्लेग के लिए समान मिलेगा।

प्रत्येक समूह में दूसरा प्लेग - 2, 5, और 8 - भी एक चेतावनी के द्वारा पेश किया गया है, लेकिन संभवतः नील नदी के बजाय फिरौन को उसके महल में भेजा गया था। आप पाते हैं कि 8:1, 9:1 और 10:1 में, "प्रभु ने मूसा से कहा।" 9:1, "यहोवा ने मूसा से कहा" और 10:1, "यहोवा ने मूसा से कहा, फिरौन के पास जाओ क्योंकि मैं ने उसका मन कठोर कर दिया है।"

प्रत्येक श्रृंखला में अंतिम प्लेग—3, 6, और 9—बिना किसी चेतावनी के शुरू हुआ प्रतीत होता है। 8:16 में, आपने पढ़ा, "तब यहोवा ने मूसा से कहा, 'हारून से कह, 'मिस्र के सारे देश की भूमि पर धूल छिड़क, और भूमि की सारी धूल कुटकियाँ बन जाएगी।'" देखिए, कोई परिचय नहीं, वह बस यही करता है। 9:8—"यहोवा ने मूसा से कहा, भट्ठी से मुट्ठी भर कालिख ले, उसे हवा में उछाल दे, वह मिस्र देश पर धूल बन जाएगी। सड़ने वाले फोड़े निकल जायेंगे।" तो वह बस यही करता है. और 10:21, "तब यहोवा ने मूसा से कहा, 'अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ा, जिससे मिस्र पर अन्धकार फैल जाए, ऐसा अन्धकार जिसे महसूस किया जा सके। तब मूसा ने अपना हाथ बढ़ाया, और सारे मिस्र में अन्धियारा छा गया।" इसलिए जब हम इन संघर्षों को व्यवस्थित करने के तरीकों को देखते हैं तो एक संरचना और एक पैटर्न प्रतीत होता है।

प्रत्येक सेट में पहली प्लेग के साथ एक उद्देश्य जुड़ा हुआ है, और यह कुछ ऐसा है जिस पर हम पहले ही विचार कर चुके हैं। 7:17 में, उद्देश्य यह है, "इससे तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूं।" 8:22, "उस दिन मैं गोशेन देश से, जहां मेरे लोग रहते हैं, भिन्न व्यवहार करूंगा, और उन पर मक्खियों के झुण्ड न होंगे। और तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं भगवान हूं," - फिर से एक उद्देश्य खंड। और 9:14, "मैं तुम पर और तुम्हारी प्रजा पर अपनी सारी विपत्तियां भेजूंगा, जिस से तुम जान लो कि सारी पृथ्वी पर मेरे तुल्य कोई नहीं है।" पहली तीन विपत्तियाँ - पानी खून में बदल गया, मेंढक और जूँ - ने मिस्र के जादूगरों और जादूगरों को आश्वस्त किया कि जो कुछ हो रहा है उसमें जादू से कहीं अधिक कुछ शामिल है। भगवान काम पर थे.

7:11 में, जहां यह सब शुरू होता है, उसके बाद भगवान ने श्लोक 8 में मूसा और हारून से कहा था, "अपनी लाठी को फिरौन के सामने फेंक दो और वह सांप बन जाएगी," वे श्लोक 10 में ऐसा करते हैं, और आप श्लोक 11 में पढ़ते हैं , "फ़िरौन ने मिस्र के बुद्धिमान लोगों और जादूगरों को बुलाया जिन्होंने अपनी गुप्त कलाओं से वही काम किया, प्रत्येक ने अपनी छड़ी को नीचे फेंक दिया,

जो एक साँप बन गया।" इसलिए उन्होंने एक तरह से वही दोहराया जो मूसा और हारून ने किया था। परन्तु हारून की लाठी ने उनकी लाठी को निगल लिया। "तौभी फिरौन का मन कठोर हो गया, और उस ने न मानी।" 7:22 में, जब पानी खून में बदल गया, तो आपने पढ़ा कि मिस्र के जादूगरों ने भी ऐसा ही किया था। इसलिये फिरौन का हृदय कठोर हो गया। 8:7 में, मेंढ़कों के साथ, "जादूगरों ने अपनी गुप्त कलाओं के साथ भी ऐसा ही किया। उन्होंने मेंढ़कों को मिस्र देश से बाहर निकाला।" लेकिन जब आप 8:18 पर पहुंचते हैं, तो मच्छरों के साथ, आप पढ़ते हैं जब जादूगरों ने अपनी गुप्त कलाओं से मच्छर पैदा करने की कोशिश की, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके। कुटकियाँ मनुष्य और पशुओं पर थीं। तब जादूगरों ने फिरौन से कहा, यह परमेश्वर की उंगली है। परन्तु फ़िरौन का हृदय कठोर था।" तो उन पहले तीन के बाद, मिस्र के जादूगरों को यकीन हो गया है कि केवल चालबाज़ी से कहीं अधिक शक्तिशाली कोई चीज़ काम कर रही है।

2. प्लेग में मिस्रियों और इज़राइलियों के बीच भेदभाव एक और टिप्पणी और हम अपना ब्रेक लेंगे, इन पहले तीन के बाद अगले छह प्लेग के साथ, टिड्डियों के संभावित अपवाद के साथ, आप प्लेग के प्रभावों में भेदभाव पाते हैं। गोशेन में रहने वाले मिस्रवासी और इस्राएली। इस्राएली प्लेग के प्रभाव से बचे हुए हैं जबकि मिस्रवासी नहीं। मुझे लगता है कि यहां उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि यहोवा अपने लोगों की ओर से काम कर रहा है। 8:21-23 में आप मक्खियों के साथ पढ़ते हैं, "यदि तुम मेरी प्रजा को जाने न दोगे, तो मैं तुम पर, तुम्हारे हाकिमों और तुम्हारी प्रजा पर, और तुम्हारे घरों में मक्खियों के झुण्ड भेज दूँगा... मैं गोशेन देश के साथ अलग ढंग से व्यवहार करूँगा, मेरे लोग कहाँ हैं. वहाँ मक्खियों के झुण्ड नहीं होंगे।" क्यों? फिर, "ताकि तुम जान लो कि मैं यहोवा हूं," मैं अपने लोगों और तुम्हारे लोगों के बीच अंतर करूंगा। तो मक्खियों से शुरू करते हुए, आपको वह अंतर मिलता है और आप पाते हैं कि 8:21-23 में, 9:4, 6, और 7 में मवेशियों के साथ। निर्गमन 9:4, "प्रभु ने पशुओं के बीच अंतर किया।" 9:11 में आपके पास फोड़े के साथ है, जादूगर मूसा के सामने खड़े नहीं रह सके क्योंकि उनके और सभी मिस्रियों पर फोड़े थे। आपके पास 9:26 में ओलों के साथ यह है, "एकमात्र स्थान जहां ओले नहीं गिरे वह गोशेन की भूमि थी, जहां इस्राएली थे।" जैसा कि मैंने बताया, टिड्डियों के बारे में किसी न किसी रूप में कुछ भी नहीं कहा गया है। लेकिन 10:23

में अंधेरे के साथ, आप पढ़ते हैं, "कोई भी किसी को नहीं देख सकता था, फिर भी सभी इस्राएलियों को उनके रहने के स्थानों में रोशनी थी।" तो निश्चित रूप से मिस्रियों और इस्राएलियों के बीच और शायद टिड्डियों के बीच भी भेदभाव था।

एमिली लाइल द्वारा प्रतिलेखन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया